दुरूदे रूहानी बिफ़ैज़ाने बाज़े अशहब लासानी

दुरूदे अ़लवी ग़ैरमन्कूत़
व दुरूदे चहेल मीम

35

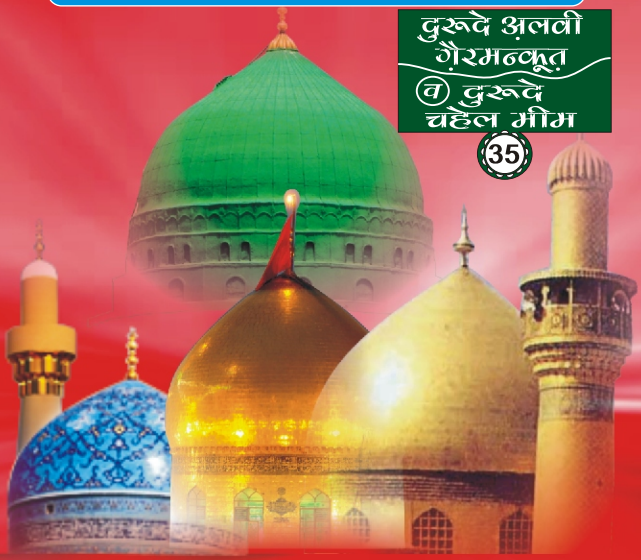

786/92

दुरूदे रूहानी बिफ़ैज़ाने बाज़े अशहब लासानी

٧٨٦/٩٢

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللہِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ

صلی اللہ علیہ وسلم م ح م د

صلی اللہ علیہ وسلم ح م د م

صلی اللہ علیہ وسلم م د م ح

صلی اللہ علیہ وسلم د م ح م

اس نقش کو دیکھنے والے کی
ہر مشکل حل ہوگی انشاء اللہ

दुरूदे अलवी ग़ैरमन्कूत व दुरूदे चहेल मीम

35

बमौक़ा मुहर्रम 1440हि०

बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोहयुद्दीन व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व हज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

फ़ज़ाइल व अअ़माले मुह़र्रमुल्ह़राम

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ سَیِّدِ

الۡعٰلَمِیۡنَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ اَجۡمَعِیۡنَ○

मुअ़ज़्ज़ज़ महीनों में मुह़र्रमुल्ह़राम भी अल्लाह तआ़ला के नज़दीक एक मोअ़ज़्ज़ज़ महीना है अह़ादीसे पाक में मुह़र्रमुल्ह़राम और इस में मौजूद यौमे आ़शूरह की बेशुमार फ़ज़ीलतें आईं हैं चुनान्चे हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदियल्लाहु अन्हु गुन्यतुत तालिबीन में फ़रमाते हैं: कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स मुह़र्रम के किसी दिन रोज़ा रखे उसे हर दिन के बदले ३० दिन का सवाब मिलता है।

दूसरी रिवायत में है ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि नबीए अकरम ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स आशूरह के दिन रोज़ा रखे अल्लाह तआ़ला

उस के लिए ६० साल रोज़ा रखने और क़ेयाम करने का सवाब लिख देता है जो शख़्स आ़शूरह के दिन रोज़ा रखे उसे एक हज़ार शहीद का सवाब अ़ता किया जाता है, जो आदमी आ़शूरह के दिन रोज़ा रखे अल्लाह तआ़ला उस के लिए सात आसमानों में बसने वालों का सवाब लिखता है जो आदमी आ़शूरह के दिन किसी को रोज़ा इफ़्तार कराए गोया उसने तमाम उम्मत को रोज़ा इफ़्तार कराया और उन्हें सैर कर के खाना खिलाया।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि नबीए अकरम ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स ज़ुल्हिज्जह के आख़िरी और मुह़र्रम के पहले दिन रोज़ा रखे उस ने गुज़िश्ता साल का इख़्तेताम और नऐ साल का इफ़्तेताह़ (शुरूअ़) रोज़े से किया और अल्लाह तआ़ला उसे ५० सालों का कफ़्फ़ारह बनादेगा। नीज़ ह़दीसे पाक में है कि

आसमान से पहली बारिश आ़शूरह के दिन हुई, सब से पहली रह़मत आ़शूरह के दिन उतरी जो आदमी आ़शूरह के दिन ग़ुस्ल करे वह मौत के ए़लावह किसी मर्ज़ में मुब्तिला ना होगा जो आदमी आशूरह के दिन खुश्बूदार सुर्मा लगाए आइंदा पूरे साल उसके आँखों में तकलीफ़ ना होगी जो आदमी आ़शूरह के दिन किसी बीमार की बीमार पुरसी करे गोया उसने तमाम औलादे आदम की ए़यादत की जो आदमी आ़शूरह के दिन एक घूँट पानी पिलाए गोया उसने पलक झपकने के बराबर भी अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी नहीं की।

जो शख़्स आ़शूरह के दिन ४ रकअ़तें इस तरह़ अदा करे कि हर रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा एक बार और सूरए इख़्लास़ ५० बार पढ़े फ़राग़त के बअ़द बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में ७० बार दुरूदे पाक भेजे तो अल्लाह तआ़ला उस के गुज़िश्ता ५० बरस के और आइन्दा ५० साल के

गुनाह बख़्श देता है, और ऊपर की दुनिया में उस के लिए एक हज़ार नूरानी महल बनाएगा।

अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को १० अ़ज़ीम एअ़ज़ाज़ात अ़ता फ़रमाए उन में से यौमे आ़शूरह १० वाँ एअ़ज़ाज़ है चुनान्चे (१) पहला एअ़ज़ाज़ रज्जबुल मुरज्जब है वह अल्लाह तआ़ला का शहरे अस़म है उसे अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत का एअ़ज़ाज़ बनाया क्यों कि इसे तमाम महीनों पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है जिस त़रह़ यह उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल है, (२) दूसरा एअ़ज़ाज़ शअ़बान का महीना है इस महीने को दूसरे महीनों पर यूँ फ़ज़ीलत ह़ासिल है जैसे रसूले अकरम ﷺ बाक़ी तमाम अम्बियाए किराम से अफ़ज़ल हैं (३)तीसरा रमज़ानुल्मुबारक का महीना है इस महीने को दूसरे महीनों पर इसी त़रह़ फ़ज़ीलत ह़ासिल है जैसे अल्लाह तआ़ला तमाम मख़्लूक़ से अफ़ज़ल है। (४)चौथा एअ़ज़ाज़ ईदुल्फ़ित्र है यह

ज़ज़ा का दिन है। (६) छटठा एअ़ज़ाज़ ज़ुल्हिज्जह के १० दिन हैं और वह अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के दिन हैं।(७) सातवाँ एअ़ज़ाज़ अ़र्फ़ा का दिन है और उस का रोज़ा २ सालों का कफ़्फ़ारह है।(८) आठवाँ एअ़ज़ाज़ यौमे नह़र यअ़नी कुर्बानी का दिन है।(९) नवाँ एअ़ज़ाज़ जुम्अ़तुल्मुबारका का दिन है और वह तमाम दिनों का सरदार है।(१०) दसवाँ एअ़ज़ाज़ आ़शूरह़ का दिन है और उस का रोज़ा एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारह है इन दिनों के तमाम औक़ात को ऐसा एअ़ज़ाज़ ह़ासिल है जिस से अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत के गुनाहों का कफ़्फ़ारह और ख़त़ाओं से त़हारत क़रार दिया है।

आ़शूरह के दिन ह़ज़रत इमामे हुसैन अ़लैहिस्सलाम शहीद किए गए, ह़ज़रत उम्मे सलमा रदि़यल्लाहु अ़न्हा से मरवी है फ़रमाती हैं कि रसूले अकरम मेरे हुजरे में थे कि इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम दाख़िल हुए मैं ने दरवाज़े से देखा तो वह आप

ﷺ के सीनए अक़दस ﷺ पर खेल रहे थे हुज़ूर अलैहिस्सलाम के दस्ते मुबारक में मिटटी का टुक्ड़ा था और आप के आँसू जारी थे ह़ज़रत इमामे हुसैन अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लेगए तो मैं अंदर आई और पूछा या रसूलल्लाह ﷺ मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों मैं ने देखा कि आप के हाथ में मिटटी का टुक्ड़ा है और आप रो रहे हैं आप ﷺ ने फ़रमाया जब मेरे सीने पर हुसैन अ़लैहिस्सलाम खेल रहे थे और मैं खुश था कि इतने में जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम ने आकर मुझे उस जगह की मिटटी दी जहाँ यह शहीद किए जाएंगे मैं इसलिए रो रहा था।

इसी महीने में सय्यिदुना आदम अ़लैहिस्सलाम, सय्यिदुना इदरीस अ़लैहिस्सलाम, सय्यिदुना नूह़ अ़लैहिस्सलाम, सय्यिदुना इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, सय्यिदुना दाऊद अ़लैहिस्सलाम, सय्यिदुना सुलैमान अ़लैहिस्सलाम, सय्यिदुना अय्यूब अ़लैहिस्सलाम, सय्यिदुना मूसा अ़लैहिस्सलाम, सय्यिदुना यूनुस

अ़लैहिस्सलाम, सय्यिदुना ईसा अ़लैहिस्सलाम व दीगर अम्बिया व औलिया को आज़माइशों से नजात मिली और उन्हें मरातिबे उ़ल्या से नवाज़ा गया। लिहाज़ा इस महीने में अहले बैते किराम व सह़ाबए किराम और शुहदाए ए़ज़ाम की बार गाहों में नमाज़ व रोज़ा अदा कर के ईस़ाल करे और ज़िक्रो अ़ज़्कार दुरूदो सलाम और फ़ातिह़ा का नज़राना पेश करे और रब की बार गाह में इन का वसीला बनाकर दुन्यवी व उख़रवी फ़लाह़ो कामयाबी के लिए दुआ़ करे। और दूसरे महीनों में भी उनकी यादें मनाए ज़िक्र की मह़फ़िलें सजाए ग़रीबों मिस्कीनों को खाना खिला कर उनकी अरवाह़ को ईस़ाल करे ताकि अगली और पिछली नस्लें दारैन की सआ़दतों से माला माल होती रहें और इन नुफ़ूसे क़ुदसिया की रूह़ानी तवज्जोहात से दह्रो कब्रो ह़श्र में शराबोर रहें।

जो शख़्स आशूरह के दिन या रात में दुरूदे तुनज्जीना

३०० बार पढ़े बअ़दहू रोज़ाना १० बार पढ़ने का मअ़मूल बनाए तो उस का यह अ़मल बरक़रार रहेगा और रोज़ाना उस के दरजात में तरक़्क़ी होगी अल्लाहो रसूल की ख़ुश्नूदी ह़ासिल होगी वह अल्लाह के ग़ज़ब से मह़फ़ूज़ हो जाएगा अल्लाह तआ़ला उसे तमाम बलाओं और बुराइयों से मह़फ़ूज़ रखेगा उसे के सारे ग़म मिट जाएंगे वह हर ज़ाहिरी व बात़िनी बिमारियों से अमन में रहेगा, नबी करीम ﷺ व अहले बैते किराम व स़ह़ाबए एज़ाम की ज़िरातो शफ़्क़त ह़ासिल होगी। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

आशूरह के दिन दुआ़ए आशूरह ज़रूर पढ़े मुतक़द्दिमीन अस़ह़ाबे रूह़ानीया ने इस के बेशुमार फ़ज़ाइल ब्यान फ़रमाए हैं, मौला तआ़ला हम सब को इस के फ़्युज़ो बरकात से नवाज़े आमीन।

दुरूदे चहेल मीम(35)

بِسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ بِسْمِ اللهِ وَالسَّلٰمُ

عَلٰى سَيِّدِنَا هُوَ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

وَسَلِّمْ دَائِمًا سَرْمَدًا عَلٰى مَوْلٰنَا مَحْبُوْبِ رَبِّ

الْمَكَانِ وَاللَّامَكَانِ وَمَنْ دَعَا عَلِيًّا وَفَاطِمَةَ

وَحَسَنًاوَحُسَيْنًا فَقَالَ اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلِىْ

وَرَحْمَةِ الْعَوَالِمِ وَشَفِيْعِ الْاُمَمِ وَهُوَ مَوَدَّتُكَ

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ وَعَلٰى وَالِدَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ

وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَالْمَوْلٰى عَلِيٍّ وَالْفَاطِمَةِ وَالْاِمَامِ

الْحَسَنِ وَاٰلِهٖ وَالْاِمَامِ الْحُسَيْنِ وَاٰلِهٖ وَجَمِيْعِ
الشُّهَدَاءِ وَمُحْيِ الدِّيْنِ وَمُعِيْنِ الدِّيْنِ وَاَحْمَدَ
وَلِيِّ اللّٰهِ وَمُحِبِّيْهِمْ وَكُلِّ اُمَمِهٖ صَلٰوةً تُوَفِّقُنَا
بِهَا حَمْدًا لَّكَ وَشُكْرًا لَّكَ وَتَغْفِرُ بِهَا كُلَّ ذُنُوْبِنَا
وَتُجِيْبُ بِهَا كُلَّ دُعَائِنَا بِحَقِّ قَوْلِكَ الْقُدْسِ
كُنْ فَيَكُوْنُ ○

तर्जमाः- अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो मालिक है सलामती देने वाला है अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और खूब सलामती नाज़िल हो हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो अल्लाह के रसूल हैं। ऐ हमारे अल्लाह तू खूब खूब दाइमी सरमदी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे मौला मकानो लामकाँ के रब के मह़बूब पर और उस ज़ात पर जिसने मौला अ़ली, बी बी फ़ातिमा,

इमामे ह़सन और इमामे हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम को बुलाया फिर फ़रमाया ऐ अल्लाह यह मेरे अहल हैं और सारे जहान की रह़मत पर, उम्मतियों की शफ़ाअ़त करने वाले पर और वह तेरी मोह़ब्बत मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।(और दुरूदो सलाम नाज़िल हो) आप ﷺ के वालिदैन पर, और आल पर, और आप ﷺ के अस़ह़ाब पर, अहले बैत पर, मौला अ़ली पर, बी बी फ़ाति़मा पर, इमामे ह़सन पर, आप की आल पर, इमामे हुसैन पर, और आप की आल पर, तमाम शोहदा पर, शैख़ मुह़युद्दीन व सय्यिदुना मोईनुद्दीन और मख़दूम सय्यिद अह़मद वलीयुल्लाह पर, और इन से मोह़ब्बत करने वालों पर, आप ﷺ की सारी उम्मत पर ऐसा दुरूद कि जिस की बरकत से तू हमें अपनी ह़म्द और शुक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और हमारे तमाम गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा और हमारी दुआ़ओं को क़बूल फ़रमा वास्ता है तेरे पाक क़ौल कुन फ़यकून का।

फ़ज़ीलतः–जो शख़्स इस दुरूद को रोज़ाना ४०/१०/७ बार पढ़ने का मअ़मूल बनाएगा उस की तमाम मुरादें पूरी होंगी नाअहल, अहल बनजाएगा, वह अहले बैते किराम व औलियाए किराम के रूह़ानी फ़ैज़ से मला माल होगा, क़ज़ाए ह़ाजत के लिए ७०/बार पढ़कर दुआ़ करे तो ह़ाजत पूरी होगी इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

દુરુદે તુનજ્જીના

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا

مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُنَجِّيْنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ

وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِىْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ

وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا

عِنْدَكَ اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصَى

الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيَاتِ وَبَعْدَ

الْمَمَاتِ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ ○

दुआए आशूरह

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

یَا قَابِلَ تَوْبَةِ اٰدَمَ یَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

یَا فَارِجَ کَرْبِ ذِی النُّوْنِ یَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

یَاجَامِعَ شَمْلِ یَعْقُوْبَ یَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

یَاسَامِعَ دَعْوَةِ مُوْسٰی وَھٰرُوْنَ یَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

یَا مُغِیْثَ اِبْرَاھِیْمَ مِنَ النَّارِ یَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

یَا رَافِعَ اِدْرِیْسَ اِلَی السَّمَآءِ یَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

یَا مُجِیْبَ دَعْوَةِ صَالِحٍ فِی النَّاقَةِ یَوْمَ عَاشُوْرَآءَ

یَانَاصِرَ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَوْمَ

عَاشُوْرَآءَ يَارَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَ رَحِيْمَهُمَا

صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

وَصَلِّ عَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَاقْضِ

حَاجَاتِنَا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَطِلْ عُمُرَنَا فِيْ

طَاعَتِكَ وَمَحَبَّتِكَ وَرِضَاكَ وَاَحْيِنَا حَيٰوةً طَيِّبَةً

وَّتَوَفَّنَا عَلَى الْاِيْمَانِ وَالْاِسْلَامِ بِرَحْمَتِكَ يَااَرْحَمَ

الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ بِعِزِّ الْحَسَنِ وَاَخِيْهِ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ

وَجَدِّهٖ وَبَنِيْهِ فَرِّجْ عَنَّا مَانَحْنُ فِيْهِ ○ پھر سات

بار یہ پڑھے سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْءَ الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى

الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضٰى وَزِنَةَ الْعَرْشِ لَامَلْجَأَ وَلَا

مَنْجَاءَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ الشَّفْعِ

وَالْوِتْرِ وَعَدَدَ كَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ كُلِّهَا

نَسْئَلُكَ السَّلَامَةَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

وَهُوَ حَسْبُنَا وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ

النَّصِيْرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

الْعَظِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى

اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَ

الْمُسْلِمِيْنَ وَ الْمُسْلِمَاتِ عَدَدَ ذَرَّاتِ الْوُجُوْدِ وَ

عَدَدَ مَعْلُوْمَاتِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

****

नोटः- दुरूदे अ़लवी पढ़ने से पहले इन कलमों को तीन तीन बार ज़रूर पढ़े।

अव्वल कल्मा तय्यिबः

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○

तर्जमाः अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाएक़ नहीं मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।

दोसरा कल्मा शहादतः

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ○

तर्जमाः मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि बेशक मोहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और रसूल हैं।

तीसरा कल्मा तम्जीदः

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ○

तर्जमाः अल्लाह पाक है और सब तअ़रीफ़ अल्लाह केलिए है और अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और अल्लाह बहुत बड़ा है, गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ नहीं मगर अल्लाह की त़रफ़ से जो बहुत बुलंद अ़ज़मत वाला है।

चौथा कल्मा तौह़ीदः

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

तर्जमाः अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी के लिए है

बादशाही और उसी के लिए तअ़रीफ़ है वही ज़िन्दा करता और मारता है और वह ज़िन्दा रहने वाला है उस को हर गिज़ कभी मौत नहीं आएगी बड़े जलाल और बुज़ुर्गी वाला है उसके हाथ में भलाई है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

पाँचवाँ कल्मा इस्तिग़फ़ारः

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَأً سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِیْ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِیْ لَا اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِيْمِ ○

तर्जमाः मैं अल्लाह से मोआ़फ़ी मांगता हूँ जो मेरा परवरदिगार है हर गुनाह से जो मैं ने जान बूझ कर किया या भूल कर छुप कर किया या ज़ाहिर हो कर

और मैं उसी की बारगाह में तौबा करता हूँ उस गुनाह से जिनको मैं जानता हूँ और उस गुनाह से भी जिसको मैं नहीं जानता(ऐ अल्लाह) बे शक तू ग़ैबों का जानने वाला और ऐ़बों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है और गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत नहीं मगर अल्लाह की मदद से जो बहुत बुलंद अ़ज़मत वाला है।

छट्टा कल्मा रद्दे कुफ़्र:

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَیْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّأْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِیْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِیْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا وَ اَسْلَمْتُ وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ○

तर्जमाः इलाही मैं तेरी पनाह मांगता हूँ इस बात से कि मैं किसी शै को तेरा शरीक बनाऊँ जानबूझ कर और बख़्शिश मांगता हूँ तुझ से उस (शिर्क) की जिस को मैं नहीं जानता और मैं ने उस से तौबा की और मैं बेज़ार हुआ कुफ़्र से और शिर्क से और झूट से और ग़ीबत से बिदअ़त और चुग़ली से और बेह़याइयों से और बोहतान से और तमाम गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया और मैं कहता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लाएक़ नहीं मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।

फ़ज़ाइल व ख़्वास़

दुरूदे अ़लवी ग़ैर मनक़ूल़

पेशे नज़र दुरूदे अ़लवी ग़ैर मनक़ूल़ रूह़ानी व क़ल्बी फ़ैज़ान का अन्मोल मख़्ज़न है जिसे अल्लाह तबारक व तआ़ला के फ़ज़्लो एह़सान नबी करीम ﷺ की ख़ुसूसी नज़रे करम हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म शैख़ मुह़युद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी व

सय्यिदी मुर्शिदी मख़दूम सय्यिद अह़मद वलीयुल्लाह रदि़यल्लाहु अ़न्हुमा की रूह़ानी दस्तगीरी से तरतीब दी गई है, जिस के फ़ज़ाइल रूह़ानी औलियाए किराम ने बेशुमार ब्यान फ़रमाया है, यह दुरूदे रूह़ानी मुकाशिफ़ात व अन्वारो तजल्लियात के ख़ज़ानों से मअ़मूर है जिस में आ़लमे हुरूफ़ व काइनाते हुरूफ़ के अस्रारो रुमूज़ और इन अ़वामिल में सैर करने की रूह़ानी हिदायत मौजूद है जिसे सालिक खुद मुशाहिदा करेगा, यह दुरूद चौदह हुरूफ़े ग़ैरे मन्कूत़ह पर मुशतमिल है जिस में बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम के अ़दाद ७८६ के मुत़ाबिक़ मुकम्मल ७८६ हुरूफ़ मौजूद हैं चुनान्चेह अलिफ़ शाने अहदियत जोकि लैसा क मिस्लेही शैउन है इस से इरादए अज़ली कुन से ज़ाहिर होने वाले अव्वल कलिमात जोकि मीम ह़ा मीम दाल है जिस का मजमूआ़ इस्मे मुह़म्मद ﷺ है जिस के अ़दाद ९२ हैं उस आ़लम के फ़्युज़ो बरकात और रूह़ानी कैफ़ियात से मुस्तफ़ीज़ होने के लिह़ाज़ से इस दुरूद में ९२

अलिफ़ मौजूद हैं जो कि शाने अहदो समद और वाहिद की तरफ़ मुशीर है और हरफ़े हा २० है जो कुन के काफ़ के अदद २० के मुताबिक़ है जिस की शान हय्युं क़य्यूम है यह हरफ़े हा कुर्आन में मौजूद हवामीमे सबअह के अस्रार से वाक़फ़ियत की तरफ़ दअवत देरहा है जो कि अस्रारे रूह की खूब्यों में से है और हरफ़े दाल ६१ हैं जो अअदादे इफ़रादी में ता और अलिफ़े मक्तूबी की तरफ़ इशारह कर रहा है और हरफ़े रा ६१ हैं जो अअदादे इफ़रादी में हरफ़े वाव मक्तूबी व अलिफ़े मक्तूबी की शान है और हरफ़े सीन मुहमला ४० हैं जिस का बातिन साद भी आता है मौजूदा हरफ़े सीन के अन्दर हरफ़े मीम मक्तूबी के अअदाद ४० का फ़ैज़ मौजूद है कि नबीए करीम ﷺ ने हरफ़े मीम के अदद के मुताबिक़ चालीस्वें साल एअलाने नुबूव्वत फ़रमाया जिस में एअलाने नुबूव्वत के लम्हात और उस एअलान पर ईमान लाने वालों का फ़ैज़े कामिल मौजूद है। और कलामे अज़ली सलामुन

क़ौलम मिर्रब्बिर्रहीम के जाँ फ़िज़ा खुश ख़बरी से माला माल है, ह़रफ़े स़ाद २४ हैं जिस से इस बात की त़रफ़ इशारा है कि इस को पढ़ने वाले को २४ घंटों में गरदिश करने वाले हुरूफ़े मुतअय्यिनह और इन लम्ह़ात में कल्मए त़य्यिबा के हुरूफ़े कामिलह २४ के फ़ुयूज़ो बरकात और अन्वारो करामात से निज़ामे काइनात पर जो अस्रात मुरत्तब होते हैं उस की समझ अ़त़ा की जाएगी मुशाहिदाते सूफ़िया के लिह़ाज़ से ह़रफ़े सॉद आलमे मह़शर की त़रफ़ इशारह कर रहा है और उस में मौजूद मुदव्वर दाएरह मअ़सूमो मह़फ़ूज़ अफ़राद का मक़ाम है इस दुरूद को पढ़ने वाला इनके फ़ैज़ान से मुस्तफ़ीज़ होगा, त़ाए मोहमला का ज़िक्र १७ बार आया है उसे अअ़दाद ६ हैं जो कि त़हारते ज़ाहिरी व बात़िनी अ़त़ा करता है और दुश्मनों को मग़लूब करता है और ह़रफ़े ऐ़न मक्तूबी इस्मे अ़ली के अव्वल ह़रफ़ ऐ़न के अअ़दाद ७० के मुत़ाबिक़ इस दुरूद में सिर्फ़ ७० बार मज़कूर है जो कि मक़ामे इश्क़ की त़रफ़ उ़रूज

देने वाला है और मक़ामे अ़मा में कुर्बो शुहूद और ऐ़नियत के नूर से मुनव्वर करने वाला है नीज़ ह़रफ़े ऐ़न मक्तूबी इस दुरूद को पढ़ने वाले को ह़रफ़े कुन के अ़दाद ७० का फ़ैज़ बख़्शेगा और ह़रफ़े यासीन मक्तूबी के अ़दाद ७० का कुर्ब अ़ता करेगा और ह़रफ़े काफ़ मीमे मक्तूबी के अ़दाद ४० के लिह़ाज़ से इस दुरूद में सिर्फ़ ४० काफ़े मोहमला मौजूद हैं लिहाज़ा यह दुरूद चहेल काफ़ की रूह़ानियत, मीमे मक्तूबी ह़रफ़े मीम का बाति़नी फ़ैज़ और आ़लमे ह़रफ़े काफ़ की किफायत शामिल किये हुए है, और ह़रफ़े लामे मक्तूबी इस्मे अ़ली में मौजूद लाम के अ़दाद ३० के मुत़ाबिक़ इस दुरूद में सि़र्फ़ ३० बार मज़कूर है जिस में कुर्आने पाक के ३० पारों और अलिफ़ लाम मीम में मौजूद लामे मक्तूबी की शान का ज़ुहूर और इस्मे लत़ीफ़ का फ़ैज़ कामिल त़ौर से मौजूद है ह़रफ़े मीमे मक्तूबी जो कि शाने अह़दियत लैसा कमिस्लेही शैउन का मज़हरे अतम और मौजूदे अव्वल है इस्मे मोह़म्मद

ﷺके अ़दाद ६२ के मुताबिक़ इस दुरूद में सिर्फ़ ६२ बार आया है ह़रफ़े वाव मक्तूबी कि जिस की अ़ददी क़ीमत ६ है जो कि अ़दाद में पहला मुकम्मल अ़दद है इस अ़दद के अजज़ा भी इसी जैसे हैं शाने वह़दत के नूर से मुनव्वर करने वाला ह़रफ़े वाव इस दुरूद में १६१ बार आया है जोकि अ़दादे इफ़रादी में मक़ामे ह़ा मक्तूबी से मुतअ़ल्लिक़ है। ह़रफ़े हा मक्तूबी जिस के अ़दाद ५ हैं जो कि आ़लमे हू व आ़लमे हविय्यत से मुतअ़ल्लिक़ है जो अफ़राद पंज्तने पाक की मोह़ब्बत के अनवार से मुनव्वर होते हैं उन्हें इस आ़लम में रसाई होती है चुनान्चेह ह़रफ़े हा इस दुरूद में सिर्फ़ ३८ बार मज़कूर है जो कि अ़दादे इफ़रादी में ११ को पहुंचता है जो कि हुज़ूर ग़ौसुल अ़ज़म रदियुल्लाह अ़न्हु के फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल होने की त़रफ़ इशारह कर रहा है और ह़रफ़े या मक्तूबी मुहमलह इस्मे अ़ली में मौजूद ह़रफ़े याए मुहमलह अपने अ़दाद १० के मुत़ाबिक़ इस दुरूद में सिर्फ़ १० बार

आया है जो कि हुवल अव्वलु वलआख़िरु वज़्ज़ाहिरु वलबातिनु के फ़ैज़ान से माला माल होने की तरफ़ इशारह कर रहा है। इस दुरूदे अ़लवी ग़ैर मन्कूत़ के मोकम्मल अअ़दाद २६०६५ हैं, जो कि अअ़दादे इफ़रादी में अ़दद २२ से मुतअ़ल्लिक़ है जिस के हुरूफ़ काफ़े मक्तूबी और बाए मक्तूबी है जिस से अल्लाह के अज़ली इरादी क़ौल कुन मुह़म्मदन की त़रफ़ इशारह है और ज़ाते वाहि़द से सबसे पहले ज़ाहिर होने वाली ज़ात मोह़म्मदुर्रसूलुल्लाह की त़रफ़ इशारह है जैसा कि फ़रमाया व कफ़ा बिल्लाहि शहीदम मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह।

जो शख़्स इस दुरूदे अ़लवी ग़ैर मन्कूत़ को रोज़ाना बिला नाग़ा १११ बार या ६२ बार या ६६ बार या ४० बार या १४ बार या ७ बार पढ़ने का मअ़मूल बनाएगा तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उस के तमाम गुनाहों को बख़्श देगा उसे अल्लाहो रसूल की खुश्नूदी और अहले बैते किराम की जियारतो शफ़्क़तो मोह़ब्बत और सय्यिदिना मौला अ़ली

रदि़यल्लाहु अ़न्हु के अक़ालीमे इ़ल्मो हि़क्मत और दरयाए जूदो सख़ा से कामिल हि़स्सा मिलेगा वह अम्बियाए किराम व स़हाबए ए़ज़ाम व अहले बैते अतहार और जुम्ला शुहदा व औलिया की रूहानी महफ़िल में शिर्कत से मुशर्रफ़ होगा उसे आ़लमे अरवाह़ की सैर हासि़ल होगी वह मुस्तजाबुद्दअ़वात क़रार दिया जाएगा उसके दरजात की तरक्क़ी होगी उस के तमाम अअ़दा और इब्लीस मरदूद और उस के तमाम लश्करी हमेशा उस के मुक़ाबले में ज़लीलो ख़्वार रहेंगे रोज़ाना पेश होने वाले वाक़ेआ़त पर मुकम्मल वाक़्फ़ीयत ह़ासि़ल होगी उस के आँखों की रौशनी हमेशा बरक़रार रहेगी अंधेरे में भी उस के लिए हर चीज़ रौशन रहेगी वह दरया में डूबने और जंगलों व ब्याबानों में हलाक होने से महफ़ूज़ रहेगा दरयाई व वह़शी जानवर उस से मानूस होंगे, दीनी गुम्रही और फ़िस्क़ो फ़ुजूर और मआ़सि़य्यत की तारीकियों से अमन में होगा उस की स़ोह़बत से बद मज़हब या फ़ासिक़ो फ़ाजिर को हिदायत

मिलेगी, तमाम आ़लम के ज़हिरो बातिन उस पर मुन्कशिफ़ होंगे और उनमें उसे सैर करने का अहल क़रार दिया जाएगा, मरीज़ पर से़हतो आ़फ़ियत की नियत से पढ़े तो जल्द शिफ़ा हासिल होगी मख़्लूक़े खुदा के ह़क़ में दुआ़ करे तो क़बूल होगी उस पर मअ़रिफ़त के दरवाज़े खुल जाएंगे और उसे साबित क़दमी हासिल होगी उस का शुमार अहलुल्लाह में किया जाएगा, तमाम जानवरों के जुबानों का उसे इ़ल्म ह़ासिल होगा, उस पर तमाम आ़लम पर होने वाली तजल्ली ज़ाहिर होजाएगी और उस का ज़ाहिरो बातिन झूट, ग़ीबत, बुग़ज़ो कीना तकब्बुरो ह़सद, जुल्मो सितम और तमाम गुनाहे सग़ीरह और कबीरह से महफ़ूज़ रहेगा बदकिरदारी का कभी भी उस पर ग़लबा ना होगा जिस किसी को भी वह नज़र भरकर देखले तो उस का नफ़्स ताबेअ़ होकर नेको परहेज़गार बनजाएगा तमाम उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी उस पर मुन्कशिफ़ होंगे और वह लौहे महफ़ूज़ में मौजूद अस्माए अ़ला की बरकतों से

माला माल होगा उसे ख़ज़ानए क़ुदरत से इस क़दर अ़ता किया जाएगा कि कभी किसी मख़्लूक़ का मोहताज ना होगा हर लम्हा उसे अल्लाहो रसूल की अ़ता के ख़ज़ाने से बेहिसाब दिया जाएगा, उस का दिल ईमानो इस्लाम और एहसान के अनवार से मुनव्वर होगा उसे कश्फ़ुल कुलूब व कश्फ़ुल क़ुबूर हासिल होगा अगर किसी वलीयुल्लाह की क़ब्रे पाक पर इस दुरूद को पढ़े तो उनसे मुलाक़ात व हमकलामी का शर्फ़ हासिल होगा उसे ग़ैबी इम्दाद और रिजालुल्ग़ैब से तअ़लीम मिलेगी मलाएका उस से मुहब्बत करेंगे और वह आ़लमे नासूत से उठकर आ़लमे मल्कूत व जबूत व लाहूत व हाहूत और आ़लमे अहदियत व वहदत में सैर करने वाला होगा और इन आ़लमों से उसे इल्मो हिक्मत अ़ता किया जाएगा उसका चेहरा और दिल नूरे ईमान से मुनव्वर होगा जिस मुर्दा दिल को देखे तो उस की मुर्दगी ख़त्म होजाएगी और बीमार को बनज़रे शफ़क़तो मुहब्बत देखे तो फ़ौरन शिफ़ा मिलेगी उस का दिल

हर लम्हा ज़िक्रे इलाही में मुस्तग़रक़ होगा और उस का क़ल्ब रूह के फ़ैज़ान से मुस्तफ़ीज़ होगा उसे हर लम्हा नेक अ़मल करने की तौफ़ीक़ मिलेगी और उस का ईमान पर ख़ातेमा होगा। इन्शा अल्लाहुतआ़ला ।

इस दुरूदे अ़लवी को अगर एक जुमअ़ से दूसरे जुमअ़ तक या एक महीना में या एक साल में इस दुरूद के हरूफ़ की तअ़दाद ७८६ के मुताबिक़ ७८६ बार पढ़े तो वह ऐसे अ़ज़ीम इन्आ़मातो इकरामात का मुस्तहिक़ होगा जो कभी उस के वहमो गुमान में भी ना होगा नीज़ वह इन तमाम नेअ़मतों का मुशहिदा करेगा बशर्ते कि इस मअ़मूल को बरक़रार रखे, खुलासा यह कि इस दुरूद के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं जो पढ़ने वाले पर मुन्कशिफ़ होते रहेंगे, पढ़ने के दौरान अगर ख़्वाब में कोई वाकेआ़ पेश आए तो उसे कभी किसी ना अहल से ना ब्यान करे।

इस दुरूदे अ़लवी को पढ़ने से पहले अल्लाह पाक की

बारगाह में दुआ़ करे कि ऐ हमारे अल्लाह तू हमें सच बोलने वाला बना दे और हमें अपनी और अपने ह़बीब ﷺ की नाफ़रमानी से महफ़ूज़ फ़रमादे उस के बअ़द छवों कलमे हुज़ूरे क़ल्ब के साथ तीन तीन बार पढ़े उसके बअ़द इस दुरूद को पढ़ना शुरूअ़ करे। बारगाहे अर्हमुर्राहिमीन में दुआ़ है कि मौला तआ़ला हमारे तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाए और हमें उन कामों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए जो अल्लाहो रसूल की खुश्नूदी और अहले बैते किराम की मोह़ब्बतो शफ़्क़त का वसीला बनें और इस दुरूदे पाक की बरकतों से हमें और नबीए करीम ﷺ की सारी उम्मतों को माला माल फ़रमाए। आमीन बिजाहिन्नबीयिल्अमीन व आलिही अजमईन।

नोटः- आस्तान-ए-ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم से मुतअ़ल्लिक़ जुम्ला मत़बूआ़त मस्तन "दुरूदे रूह़ानी व दोआ़-ए-क़ल्बी, दुरूदे मोह़म्मदी, सलामे मोह़म्मदी मअ़ अस्रारे "मीम ह़ा मीम दाल" और दुरूदे चहल मीम" वग़ैरह **www.syed14peer.com** पर मुलाह़ज़ा कर सकते हैं। **Mob.:** 9695435877

दुरूदे अ़लवी ग़ैरमन्क़ूत

مَعَ اسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ

وَسَلِّمْ وَ كَرِّمْ كَرَمًا دَائِمًا عَلٰى مَا ادَّعٰى صَارَ

مُحَمَّدٌ مَالَهٗ مَوْلًى وَعَلِيٌّ لَهٗ مَوْلٰى وَمَا ادَّعٰى

مُحَمَّدٌ مِصْرُ عِلْمٍ وَعَلِيٌّ مَوْرِدُهَا اِسْمُهٗ

سِرٌّ وَدُوْدٍ هُوَ حَامِدٌ وَسِرٌّ وَدُوْدٍ هُوَ اَحْمَدُ وَسِرٌّ

وَدُوْدٍ هُوَ مَحْمُوْدٌ وَ سِرٌّ وَدُوْدٍ هُوَ مُحَامِدٌ

وَسِرٌّ وَدُوْدٍ هُوَ اٰمِرٌ وَ سِرٌّ وَدُوْدٍ هُوَ مُكَرَّمٌ وَسِرٌّ

وَدُوْدٍ هُوَمُطَهَّرٌ وَسِرٌّ وَدُوْدٍ هُوَحَاكِمٌ

وَسِرٌّ وَدُوْدٍهُوَعَاصِمٌ وَسِرٌّ وَدُوْدٍهُوَمَعْصُوْمٌ وَ

سِرٌّ وَدُوْدٍهُوَ مُعْصِمٌ وَسِرٌّ وَدُوْدٍ هُوَ وَاسِعٌ

وَسِرٌّ وَدُوْدٍ هُوَ وَرَعٌ وَسِرٌّ وَدُوْدٍ وَارِعٌ وَ سِرٌّ

وَدُوْدٍ مُوْرِعٌ وَ مَسْعُوْدٌ وَطَائِعٌ وَمُطَاعٌ

وَمُعْطٍ وَهَامِعٌ وَوَاعٍ وَصَادِعٌ وَعَاهِدٌ

وَمَعْهُوْدٌ وَوَاعِدٌ وَمَوْعُوْدٌ وَرَاكِعٌ وَدُعَاءٌ

وَدَاعٍ وَمَدْعُوٌّ وَمُسْمِعٌ وَمُسْرِعٌ وَصُعُوْدٌ

وَمُصْعِدٌ وَمُعَطِّرٌ كَرَمُهٗ وَاسِعٌ وَرُحْمُهٗ عَامٌّ

وَعَطَائُهٗ دَائِمٌ وَعِلْمُهٗ اَحَاطَ مَاصَارَ

وَمَامَاصَارَ وَاَعْطَاهُ اَحَدٌ صَمَدٌ وَاحِدٌ كُلَّ

مَااَرَادَ وَاَدْعُوْكَ اِهْدِرَهْطَ وُدِّكَ صِرَاطَكَ

وَوُسْعِ كَرَمِكَ وَدَاعِيْ وِدَادِكَ وَعَطَاءِ كَرَمِكَ

وَدُعَاءِ مِعْمَارِ حَرَمِكَ وَسَطْعِكَ وَاَمْرِكَ

وَمَطْلَعِ عُطَارِدِ عُلُوْمِكَ وَحِكَمِكَ وَصَادِعِ

اَمْرِكَ كَمَاوَرَدَ اِصْدَعْ مَااَمَرَكَ اٰمِرٌ وَهُوَ

وُسْعُكَ وَسَعْدُكَ وَسَاطِعُكَ وَسَامِعُكَ

وَصُعُدُكَ وَسِرُّ رُوْحِ وَسِرُّ اَسْرَارٍ وَسِرُّ اَسْرَارِ

طٰسٓمّٓ وَ اَوْحَدُ كُلِّ عَصْرٍ وَمُسْعِدُ عَوَامِ

وَمِحْوَرُ سَمَاءِ صُعُوْدٍ وَمِصْعَادُ وِدَادٍ وَسَدَادُ

مَعَادٍ وَمُصْعِدُ صُوَرٍ وَصُعُوْدُ رُوْحٍ وَهَادِیْ

صِرَاطِكَ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَعَلٰی وَالِدِهٖ وَاُمِّهٖ

وَاٰلِهٖ وَكُلِّ اُمَمِهٖ عَدَدَ كَرَمِكَ وَاِحْصَاءِ حِكَمِكَ

وَوَعْدِكَ وَعَهْدِكَ وَعَدَدَ مَا عَدَّ وُدُّكَ ○

तर्जमा:– अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो मालिक है सलामती देने वाला है ऐ हमारे अल्लाह तू खूब खूब दाइमी दुरूदो सलाम और करम नाज़िल फ़रमा उस ज़ात पर जिसने फ़रमाया कि मैं जिसका मौला हूँ अ़ली भी उस के मौला हैं

और उस ज़ात पर दुरूदो सलाम और करम नाज़िल हो कि जिन्हों ने फ़रमाया कि मैं इल्म का शहर हूँ और अ़ली उस के दरवाजा हैं जिनका नाम यह है वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ तअ़रीफ़ करने वाला है, वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ बहुत ज़्यादा तअ़रीफ़ करने वाले हैं, वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ तअ़रीफ़ किये हुऐ हैं, और वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ बेह़द तअ़रीफ़ करने वाले हैं, वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ हुक्म करने वाले हैं, वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ साह़िबे करामत हैं, वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ निहायत सुथरे हैं, और वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ फ़ैसला करने वाले हैं, वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ बचने वाले हैं, वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ मअ़सूम हैं, वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ बचाने वाले हैं, और वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ कुशादगी वाले हैं, वह बहुत

मोह़ब्बत करने वाले का राज़ सरापा परहेज़गारी हैं, वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ परहेज़गारी वाले हैं, और वह बहुत मोह़ब्बत करने वाले का राज़ तक़वा वाले हैं, सआ़दत अ़त़ा किये गऐ हैं, फ़रमाँबरदार हैं, लाइक़े एत़ाअ़त हैं, खूब अ़त़ा फ़रमाने वाले हैं, नूर वाले हैं, आँसू बहाने वाले हैं, बचने वाले हैं, ह़क़ को खुल्लम खुल्ला ब्यान फ़रमाने वाले हैं, अ़हद करने वाले हैं, अ़हद किये हुए हैं, वअ़दह करने वाले हैं, वअ़दह किये हुए हैं, रूकूअ़ करने वाले हैं, अल्लाह की पुकार हैं, बुलाने वाले हैं, ह़क़ की त़रफ़ बुलाए गये हैं, सुनाने वाले हैं, तेज़ रफ़्तार हैं, सरापा बुलंदी हैं, बुलंद दरजा वाले हैं, बुलंद करने वाले हैं, महकाने वाले हैं, उनका करम कुशादह है, उन की रह़मत आ़म है, उन की अ़त़ा दाइमी है, उनका इल्म मा काना व मा यकूनु को मोह़ीत़ है, यक्ता बेनियाज़ तन्हा ज़ात ने उन्हें हर वह चीज़ अ़त़ा फ़रमाई जो उसने चाहा, मैं तेरी बारगाह में फ़रयाद करता हूँ कि तू अपने

ह़बीब की उम्मत को सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत फ़रमा, और दाइमी दुरूदो सलाम और करम नाज़िल हो तेरे करम की वुस्अ़त पर, तेरी मुह़ब्बत की त़रफ़ बुलाने वाले पर, तेरे करम की अ़त़ा पर, सय्यिदना इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दुआ़ पर, तेरे नूर पर, तेरे अम्र पर, और तेरे उ़लूमो ह़िक्मत के उ़त़ारिद के तुलूअ़ होने के मक़ाम पर, और तेरे हुक्म को खुल्लम खुल्ला ब्यान करने वाले पर, जैसा कि तू ने फ़रमाया ऐ ह़बीब ﷺ आप को जिस चीज़ का हुक्म दिया गया है आप उसे वाज़ेह़ त़ौर पर ब्यान फ़रमादें और वह तेरी वुसअ़त, तेरी सआ़दत, तेरी रौशनी, तेरे सुनने वाले, तेरी बुलंदी, रूह़ के राज़, राज़ों के राज़, त़ा सीम मीम के राज़ों के राज़, हर ज़माने के यक्ता, अ़वाम को नेक बनाने वाले, बुलंदी के आसमान के मरकज़, मुह़ब्बत का ज़ीना, आख़िरत की दुरूस्ती, सूरतों को बुलंद फ़रमाने वाले, रूह़ की बुलंदी, और तेरे रास्ते की हिदायत देने वाले मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, और

ख़ूब दाइमी दुरूदो सलाम और करम नाज़िल हो आप ﷺ के वालिदैन (सय्यिदुना अब्दुल्लाह व सय्यिदह आमिना रदियल्लाहु अन्हुमा) पर, और आप ﷺ की आल पर और आप ﷺ की सारी उम्मत पर, तेरे करम की तअ़दाद के मुताबिक़ तेरी हिक्मतों के शुमार के मुताबिक़ तेरे वअ़दों और तेरे अ़हदों की तअ़दाद के मुताबिक़ और उस तअ़दाद के मुताबिक़ जो तेरी मुहब्बत ने शुमार फ़रमाया।

नोटः- आस्तान-ए-हज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم से मुतअ़ल्लिक़ जुम्ला मतबूआ़त मस्तन "दुरूदे रूहानी व दोआ़-ए-क़ल्बी, दुरूदे मोहम्मदी, सलामे मोहम्मदी मअ़ अस्रारे "मीम हा मीम दाल" और दुरूदे चहल मीम" वग़ैरह **www.syed14peer.com** पर मुलाहज़ा कर सकते हैं। **Mob.:** 9695435877

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودہوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com